गूँज रही गीता की वाणी, शान्तिवन के प्रांगण में

- ब्र.कु. सूरज...

जहाँ से सारे विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है...जहाँ से लाखों मनुष्य प्रभु-मिलन का सुख पा रहे हैं...जहाँ आते ही सबके मन निर्मल हो जाते हैं...जहाँ कदम रखते ही मनुष्य को आत्म-साक्षात्कार होने लगता है...ऐसी परमात्म-अवतरण भूमि है मधुबन। जिसके तीन विशाल स्थान हैं - पाण्डव भवन, ज्ञानसरोवर व शान्तिवन।

युगों से हम प्रभु-अवतरण की राह तकते रहे। उसके लिए हमने कठिन साधनाएँ भी की तो त्याग-तपस्या भी की। अब आकर भगवान को सम्मुख देखने का सौभाग्य मिला और यह सौभाग्य 18 वर्षों से मिल रहा है विशाल शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में।

यहाँ कई हजार विदेशी प्रति वर्ष आते हैं। अभी-अभी रशिया की एक कुमारी ज्ञानसरोवर में सुना रही थी कि वह भगवान की खोज में चार बार भारत में आई और अब आकर भारत में ही उसकी यह इच्छा पूर्ण हुई मधुबन में।

मिलन के साथ हो जाता है।

यदि आपने इस परमात्म-भूमि पर भ्रमण किया हो तो अनुभव किया होगा कि यहाँ आते ही मनुष्य गहन शान्ति का अनुभव करता है, यहाँ तनाव स्वत: ही समाप्त हो जाता है, यहाँ उसकी सोई हुई चेतना जागृत हो जाती है। यहाँ उसके विचार बदल जाते हैं व जीवन दिव्य हो जाता है।

आबू की तलहटी में बसा है विशाल शान्तिवन, जो सचमुच शान्ति का वन है। इसी के अंतर्गत है वो पावन स्थल डायमंड हॉल जो बिना पिल्लर के बना है और जिसमें बीस हजार लोग एक साथ बैठ सकते हैं। इसी में अनेक भाषाओं के ट्रांसलेशन की भी व्यवस्था है। यहीं पर आगमन होता है प्यारके सागर पतित पावन परमात्मा का।

सोचो...जहाँ भगवान की दृष्टि पड़ती हो, जहाँ घण्टों उनकी उपस्थिति रहती है, वह स्थान कैसा होगा ? प्रभु-प्रेम की तरंगों से तरंगित है यह स्थान। आध्यात्मिक उर्जा से भरपूर है यह

यह सत्य है कि संसार में यदि किसी को शान्ति चाहिए तो वह भारत में ही आता है। यदि किसी को सत्य ज्ञान चाहिए तो उसकी खोज भी वह भारत में ही करता है और यदि किसी को अपने परमपिता से मिलना हो तो वह भी भारत की ओर ही मुख करता है। अमेरिका या यूरोप या अन्य किसी भी देश की ओर नहीं। ऐसा क्यों ? कारण यही है कि भारत धर्म व अध्यात्म की भूमि है। भारत में ही भगवान आते हैं, यही देव भूमि भी है।

भारत एक महान देश है। इसी के साथ माता शब्द भी जुड़ा है क्योंकि यह सबकी पालना करती है, यहाँ सभी धर्मों का सम्मान होता है। अन्य किसी देश को माता नहीं कहा जाता है। आप कहेंगे कि भारत महान कैसे है, यहाँ तो काफी भ्रष्टचार व बेइमान लोग भी हैं। परन्तु नहीं, आप ध्यान से देखो, यहाँ अनेक मनुष्यों में अभी भी पवित्रता है, परस्पर स्नेह व सहयोग की भावना है। यहाँ की कल्चर (सभ्यता) अब तक भी महान रही है। थोड़ी सी महानात्माएँ, करोड़ों पापात्माओं पर भारी होती हैं।

भारत सचमुच ही महान तीर्थ है। परन्तु उसमें भी सबसे महान है आबू तीर्थ। जहाँ ज्ञान की गंगा बहती है, जहाँ स्वयं भगवान आते हैं, जहाँ से सभी को गति व सद्गति प्राप्त होती है। जहाँ आकर मनुष्य की सभी यात्राएँ पूर्ण हो जाती हैं, जहाँ उसकी भक्ति का भी अन्त प्रभु-

हॉल। यहाँ हजारों लोग एक साथ बैठकर राजयोग का अभ्यास करते हैं। ये ही वह हॉल है जहाँ बीस हजार तक एक साथ पवित्र व महानात्माएँ बैठकर प्रभु-मिलन के आनंदकारी क्षणों में मग्न हो जाती है।

गीता ज्ञान दाता, ज्ञान के सागर निराकार परम आत्मा जब साकार माध्यम में अवतरित होते हैं तो पहले सबको दृष्टि देते हैं। उनकी दृष्टि पाकर सभी निहाल हो जात हैं, अनेकों के दुख, सुख में बदल जाते हैं। सम्मुख भगवान को पाकर सभी तृप्त हो जाते हैं। उनके मन से आवाज निकलने लगती है-पाना था सो पा लिया और परमात्म-अवतरण का यही तो प्रत्यक्ष प्रमाण है। सबको लगता है कि उनकी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई, उनकी भक्ति सफल हो गई।

तत्पश्चात वे देते हैं सत्य-ज्ञान, राजयोग की साधना का गुह्य ज्ञान, आत्मा को सम्पूर्ण बनाने की गुह्यतम धारणाएँ, मनोविकारों को नष्ट करने की विभिन्न युक्तियां व सर्व समस्याओं के समाधान। वहाँ सभी का सोया हुआ स्वमान जग जाता है। हजारों लोग प्रभु-प्रेम की अनुभूति करने लगते हैं, सभी के चित्त शीतल, शुद्ध व मन निर्मल हो जाता है। सोचो, तीस हजार लोग बैठे हों और अपरम्पार शान्ति हो, क्या यह परमात्म-शक्ति के अलावा कोई कर सकता है। भगवान को सम्मुख बैठकर ज्ञान देते हुए देखकर सभी के मन परम आनंद की लहरों में लहराने लगते हैं।

डॉ. सचिन (ग्लोबल हॉस्पिटल, माउण्ट आबू) की सत्य घटना का उल्लेख करना अति सार्थक होगा। डॉ. सचिन रामकृष्ण मिशन के सन्यासी बनने के लिए तैयार थे। माँ-बाप शोकग्रस्त थे। उनकी ब्रह्माकुमारी बहन ने उनसे आग्रह किया कि सन्यास लेने से पूर्व वे एक बार शान्तिवन आबू में प्रभु-अवतरण का दिव्य कार्यक्रम देख आयें। बिना ज्ञान लिये डॉ.सचिन बीस हजार की सभा में आ बैठे। परमधाम से शिव बाबा का अवतरण हुआ, वे अपनी सुध-बुध खो बैठे। स्टेज पर उन्हें स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस व अन्य अनेक ऋषि क्रमश: आते दिखाई दे रहे थे जो बाबा की ओर इशारा करके कह रहे थे यही है वह, जिसे तुम ढूंढ रहे हो, यही है। बस डॉ.सचिन सच्चे राजयोगी बन गये। आजीवन पवित्रता व्रत के साथ यहाँ के सफल एम.डी.डाक्टर हैं जो सच्चे राजयोगी हैं, श्रेष्ठ साधक हैं, एकाग्रचित्त हैं व निष्काम भाव से सभी को जीवनदान देने में तत्पर हैं।

ऐसी ही कहानी है लाखों लोगों की। उनमें अनेक डाक्टर हैं, अनेक इंजीनियर हैं, मनोविज्ञान व विज्ञान के प्रोफेसर हैं, अच्छे सन्यासी हैं, व्यापारी हैं, वैज्ञानिक हैं, निर्धन भी है व ग्रामीण कृषक भी हैं। जिन्हें डायमण्ड हॉल में प्रभु-मिलन का सुख मिला, साक्षात्कार हुए और उनकी जन्म-जन्म की सत्य की खोज समाप्त हो गई।

जब यहाँ परमात्म-अवतरण होता है तो शान्ति के सागर की शान्ति की लहरें, प्यार के सागर की प्यार की तरंगे व सर्वशक्तिवान के पावरफुल वायब्रेशन्स चारों ओर छा जाते हैं, वे सभी के मन को एकाग्र कर देते हैं, जो भी सम्मुख बैठे हैं उन्हें लगने लगता है कि जो हमारा अपना है, जो हमारे मन का मीत है, जो सबकी मंजिल है, वो सामने बैठा है।

यहाँ पर प्रतिदिन एक लाख का भोजन, रोटी, चाय आदि बनती है। यहाँ का भोजन बनाने का आधुनिक तरीका (किचन) देखने योग्य है। दो घण्टे में भोजन तैयार हो जाता है। यहाँ की सम्पूर्ण व्यवस्था देखकर लोग दंग रह जाते हैं। यहाँ की प्रिंटिंग प्रेस, साहित्य विभाग अति सुंदर हैं। एफ.एम.रेडियो मधुबन से चौबीस घण्टे आध्यात्मिक प्रसारण होता रहता है।

इसी स्थान से विश्व में अध्यात्म का प्रचार व परमात्म-संदेश फैल रहा है। ये ही मधुबन भारत को पुन: विश्वगुरू की उपाधि से अलंकृत करायेगा। यहीं से सभी को दुखों से मुक्ति का मार्ग मिलेगा व निर्वाण की यात्रा प्रारंभ होगी। यहीं बैठकर योगीजन समस्त विश्व को प्रेरित करेंगे और यहीं से योग की ज्वाला प्रकट होगी जिससे पाप व पापियों की इतिश्री होगी। यही स्थान महान देश भारत का सम्मान बढ़ायेगा और यहीं से जयजयकार होगी। लाखों लोगों के मुख से सुना है यह स्थान मेरें जीवन का सबसे शुकुनदायी रहा है। यहाँ की धरती की हर एक कण में

छोटाउदेपुर। आदिवासी महासम्मेलन में पधारे गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोनिका एवं ब्र.कु. बसन्ता।

अहमदाबाद। अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध कम्प्यूटर मॉल महेता ब्रदर्स के डायरेक्टर भ्राता अरविन्द महेता को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. नंदिनी बहन।

अमरावती । विधायक प्रविण भाऊ पोटे जी का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए स्थानीय संचालिका राजयोगिनी सीता दीदी एवं बी.के. बाबा साहेब शिरभावे।

बाढ । दुर्गापूजा में चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात अपने हृदय के उद्गार व्यक्त करते हुए अनुमण्डल पदाधिकारी कुष्ण वाजपेयी।

मीरगंज (गोपालगंज) बिहार : चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्-घाटन के बाद डी.एस.पी. आनंद कुमार पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. सुनीता।

बहराईच । नवरात्रि पर आयोजित नवदुर्गा की चैतन्य झाँकी का अवलोकन करने के बाद समूह चित्र में लखनऊ की ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. विपिन, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. जया तथा अन्य।